शिकार, पशुपालन इत्यादि के दृश्य हैं। मध्याश्म एवं ताम्राश्म काल के चित्रों के ऊपर घुड़सवारों, युद्ध–दृश्य बने होने से यह महत्वपूर्ण जानकारी यहाँ मिली थी कि इस क्षेत्र में घोड़ों का आगमन ऐतिहासिक युग में हुआ। उत्खनन में मिट्टी के पात्र, लौह उपकरण, अन्य पुरासामग्री मिलने से तात्कालिक मानव की तकनीकी क्षमता एवं विकास का बोध होता है।

भीमबैठका का क्षेत्र पाषाण युग से मध्यकाल तक घने जंगलों से आच्छादित रहा तथा पर्याप्त पानी की उपलब्धता होने से आदिमानव प्रत्येक क्षेत्र में अपना विकास कर सका। हमारा अब दायित्व है कि प्राचीनकाल के पर्यावरण को सहेज व संजोकर रखें।

हाल ही में भीमबैठका के शैलाश्रयों को विश्व धरोहर की श्रेणी में लिया गया है, क्योंकि सम्पूर्ण विश्व में भीमबैठका ही एक ऐसा स्थल है, जहाँ एक जगह पर इतनी बड़ी संख्या में प्रथम बार शैलाश्रय प्राप्त हुये हैं। इससे इन शैलाश्रयों को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुयी है, जिससे इस क्षेत्र में पर्यटन तथा रोजगार के अवसर स्थानीय निवासियों को प्राप्त होंगे। आज हम सभी का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि इन्हें हम अपनी धरोहर समझकर सुरक्षित रखें, ताकि आने वाली पीढ़ी को यह धरोहर सुरक्षित मिल सके। आज यहाँ पर यह धरोहर है तो हमारा मूल्य है। यदि भीमबैठका ही न होगा तो हमारा क्या मूल्य है। अतः हम सभी का कर्तव्य है कि इसके अस्तित्व को किसी भी तरह के खतरों से मुक्त रखें।

अपील

एतद् द्वारा जन सामान्य को अवगत कराना है कि भारत की संसद से पारित होने के पश्चात् भारत सरकार द्वारा प्राचीन स्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (संशोधन एवं विधिमान्यकरण) अधिनियम 2010, 30 मार्च 2010 को राजपत्र अधिसूचना संख्या 13 द्वारा जारी किया गया है। यह अधिनियम प्राचीन स्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम 1958 का संशोधित रूप है। यह दोनों अधिनियम वेबसाईट www.asi.nic.in पर उपलब्ध हैं। इस अधिनियम का उद्देश्य हमारी विरासत को सुरक्षित एवं संरक्षित रखना है तथा यह राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों के प्रतिषिद्ध क्षेत्र में किसी भी प्रकार का निर्माण चाहे वह लोक परियोजना ही क्यों न हो, न होने देने के सरकार के दृढ़ निश्चय को प्रदर्शित करता है। इस अधिनियम के द्वारा किसी भी केन्द्रीय संरक्षित स्थल अथवा स्मारक की सीमा से चतुर्दिक न्यूनतम 100 मीटर के क्षेत्र को प्रतिषिद्ध क्षेत्र घोषित किया गया है। प्रतिषिद्ध क्षेत्र के परे चतुर्दिक न्यूनतम 200 मीटर के क्षेत्र को विनियमित क्षेत्र माना गया है। अतः अपनी बहुमूल्य धरोहर की सुरक्षा हेतु उपरोक्त अधिनियम के प्रावधानों के कार्यान्वयन में प्रत्येक नागरिक का सक्रिय सहयोग प्रार्थनीय है।

समय :– स्मारक प्रतिदिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक दर्शकों हेतु खुले रहते हैं।

अधीक्षण पुरातत्वविद्

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण,
भोपाल मण्डल, जी.टी.बी. काम्प्लेक्स, बी–ब्लॉक
द्वितीय तल, टी.टी. नगर, भोपाल – 462003
फोन नं0. 0755-2558250,2558270 टेलीफेक्स : 0755-2558250
ईमेल : circlebho@gmail.com वेबसाइट : www.asi.nic.in

विश्व धरोहर स्थल

भीमबैठका के चित्रित शैलाश्रय

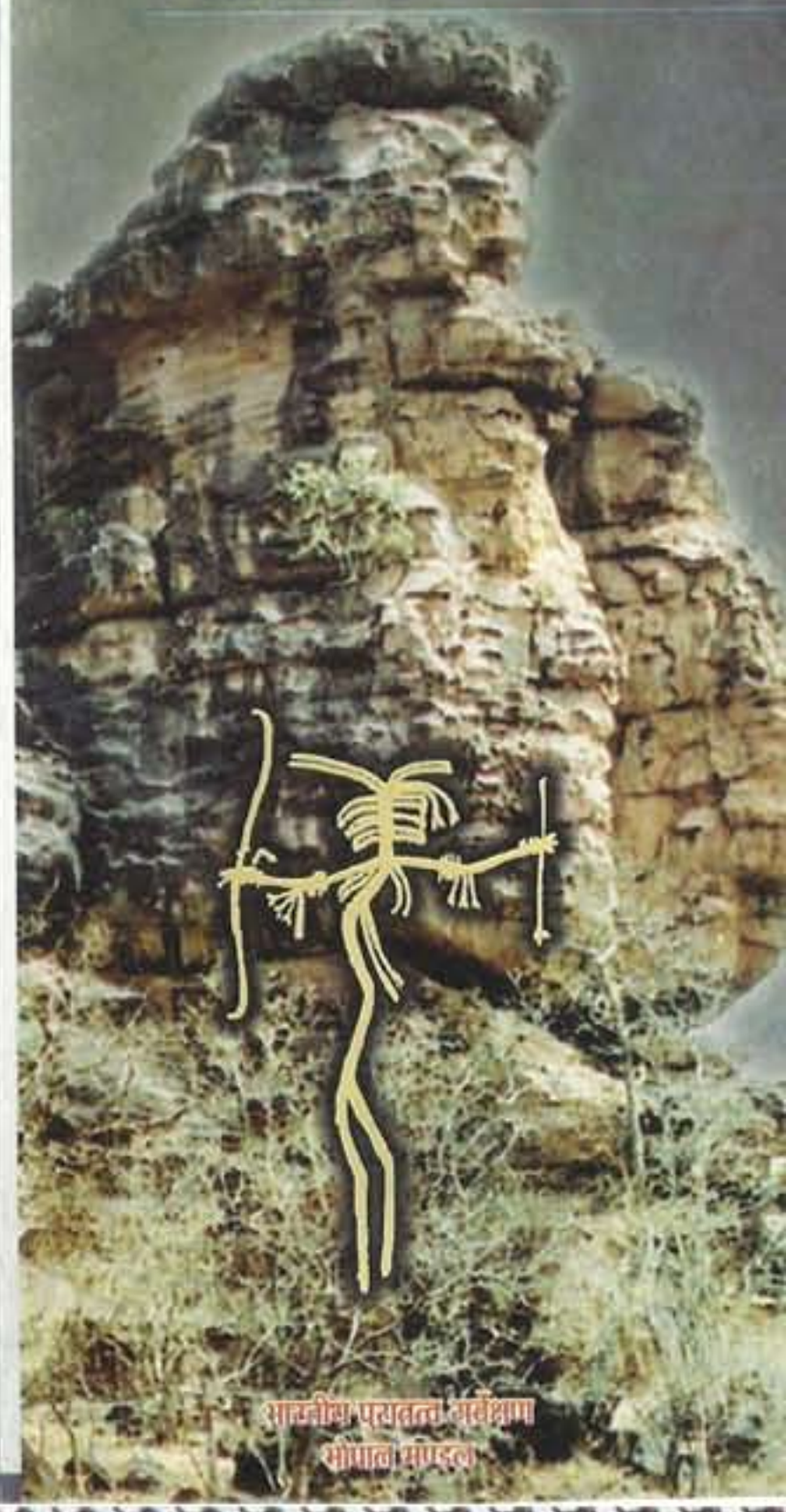

भीमबैठका के चित्रित शैलाश्रय

भीमबैठका के विश्वविख्यात शैलाश्रय भोपाल से दक्षिण – पूर्व दिशा में लगभग 45 किलोमीटर की दूरी पर, भोपाल–होशंगाबाद मार्ग पर आदिवासी ग्राम भियापुर के निकट स्थित है। यहां जाने के लिये भारत के विभिन्न स्थलों से रेल मार्ग के द्वारा भोपाल व होशंगाबाद तक पहुंचा जा सकता है। यहां से बस के द्वारा भियापुर ग्राम की रेल्वे क्रासिंग तक जाया जाता है, जहां से इस स्थल के लिये लगभग 3 किलोमीटर की पहाड़ी की पैदल यात्रा करनी पड़ती है। निजी वाहनों द्वारा सुगमता से शैलाश्रय स्थल तक जाया जा सकता है।

भीमबैठका का सम्पूर्ण क्षेत्र विन्ध्याचल की उपत्यकाओं में स्थित है। यहां की पहाड़ियाँ घने जंगलों से आच्छादित है। जंगलों में विभिन्न प्रकार के जानवरों जैसे–जंगली सुअर, नीलगाय, तेंदुआ, रीछ, लकड़बग्घा आदि के यदा–कदा दर्शन हो जाते हैं। भीमबैठका क्षेत्र में जाने से ऐसा लगता है मानो यहाँ की पहाड़ियाँ किसी दुर्ग की दीवारों से घिरी हों। औबेदुल्लागंज या समीपस्थ स्थानों से यहाँ की पहाड़ी किलेनुमा लगती है, जो कि वास्तव में विशाल चट्टान मात्र है।

भीमबैठका के नाम के संबंध में इस क्षेत्र में ऐसी धारणा है कि अज्ञातवास के समय पाण्डव यहाँ पर रहे थे तथा विशाल चट्टानों पर भीम बैठा करते थे। इस कारण ही इस स्थान का नाम भीमबैठका हो गया। यहाँ कई स्थान पाण्डवों के नामों से जुड़े हैं जैसे कि एक निकटस्थ ग्राम पण्डापुर के नाम से विख्यात है, भियापुर ग्राम भीमपुरा का अपभ्रंश है। लाखाजुआर जंगल के विषय में ऐसा कहा जाता है कि कौरवों ने लाख के महल को पाण्डवों के उसमें रहते हुये जलाया था, क्योंकि उक्त स्थल पर शैलाश्रयों में पाषाणीय आवासों के अवशेष मिलते हैं।

भीमबैठका की सर्वप्रथम खोज का श्रेय विक्रम विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता स्वर्गीय डॉ. वी.एस. वाकणकर को है। यह महत्वपूर्ण स्थल सर्वप्रथम उनके ही द्वारा सन 1957–58 ई. में प्रकाश में लाया गया। कालान्तर में समय–समय पर यहाँ विस्तृत खोज व पुरातत्वीय उत्खनन किये गये। उत्खनन में पूर्व पाषाणकाल से मध्यकाल तक के पुरावशेष क्रमबद्ध रूप से प्राप्त हुये है।

यहाँ के पुरावशेषों तथा शैलचित्रों को विश्वपटल पर लाने के लिये पुरातत्वविदों द्वारा विशेष अध्ययन किया गया। यहाँ के शैत्रचित्रों का अध्ययन किये जाने पर तत्कालीन समाज की झांकी देखने को मिली। मुख्य रूप से यहाँ के सबसे प्राचीन शैलचित्र मध्याश्म युग के जाने जाते हैं। पुरातत्वविदों द्वारा यहां के शैलचित्रों व पुरावशेषों के अतिरिक्त, किले की दीवारें, लघुस्तूप, पाषाणों के आवास, शुंग एवं गुप्तकालीन अभिलेख, शंखलिपि के चित्रित अभिलेख, परमार कालीन मन्दिर व प्रतिमायें इत्यादि प्रकाश में लाये गये।

शैलचित्रकला की श्रेणी में भीमबैठका के शैलचित्र भारत के प्राचीनतम चित्र माने गये हैं। सर्वेक्षण के अंतर्गत यहाँ लगभग 1000 शैलाश्रयों की खोज की गई, जिसमें लगभग 400 शैलाश्रयों में विभिन्न युगों के चित्र हैं। भीमबैठका क्षेत्र में कई शैलचित्रों के समूह हैं, जो भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अन्तर्गत अभिरक्षित है।

आदिमानव यहाँ की गुफाओं में हजारों वर्षों तक निवास करता रहा। शैलाश्रयों के ऊँचाई में स्थित होने तथा जंगली पेड़–पौधों से शैलाश्रयों के ढके रहने के कारण ही आज ये चित्र सुरक्षित हैं। प्रमुख रूप से ये चित्र लाल गेरू, सफेद खड़िया व हरे रंग से बनाये गये थे। यह सामग्री पुरातत्वीय उत्खननों से भी प्राप्त होती है। शैलाश्रयों में चित्रों की कई परतें देखी जा सकती हैं, जो विभिन्न युगों की कला को प्रदर्शित करती है।

शैली व चित्रकला की विषयवस्तु के आधार पर इन चित्रों का वर्गीकरण किया गया है। इन चित्रों में शिकार–दृश्य, नृत्य करती मानव आकृतियाँ, पशु–पक्षी, पशुओं को चराते हुये मानव तथा सामाजिक चित्र इत्यादि देखने को मिलते हैं। यहाँ दुर्गा मंदिर शैलाश्रय में शुंग कालीन ब्राह्मी अभिलेख में एक सिंहक नामक भिक्षु का नाम मिलता है।

भीमबैठका में पुरातत्वीय उत्खनन से प्राप्त विभिन्न युगों के पुरावशेषों से मानव सभ्यता एवं संस्कृति के क्रमिक विकास व आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है। पाषाण युग में मानव पत्थरों से हथियार निर्मित कर तथा जानवरों को मारकर अपना भरण–पोषण करता था। तत्पश्चात् मध्याश्म एवं ताम्राश्म काल में कृषि का विकास तथा पशुपालन प्रारंभ हुआ, मानव समूह में रहने लगा। उसने तात्कालिक परिस्थितियों को चित्रों के माध्यम से शैलाश्रयों की दीवारों पर उतारा जिसमें नृत्य,